मधुबन

3

मेरे प्रिय गीत

बेला के खिलौने और अन्य कविताएँ



3

मेरे प्रिय गीत

बेला के खिलौने और अन्य कविताएँ

शान्ता मोहन



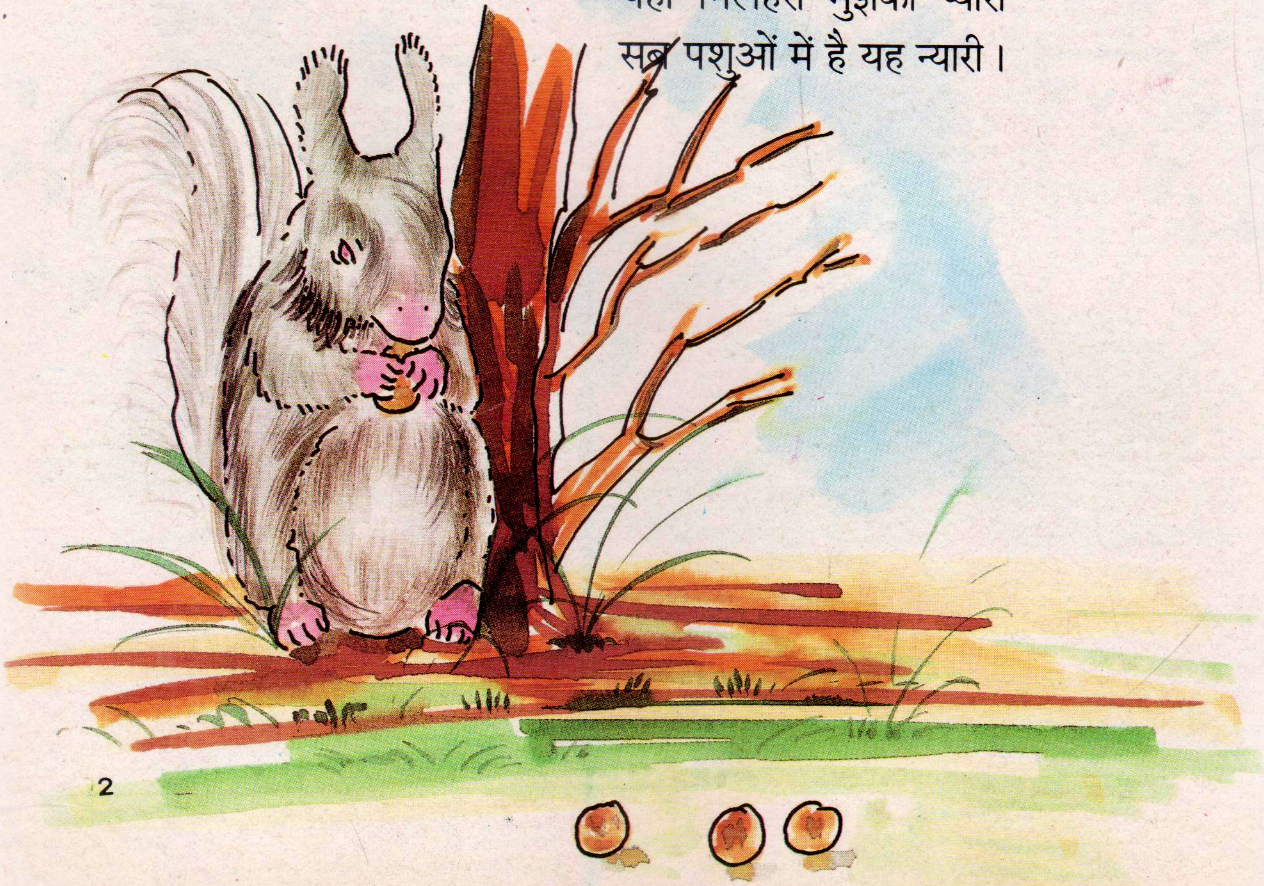
मधुबन

कट्टो गिलहरी

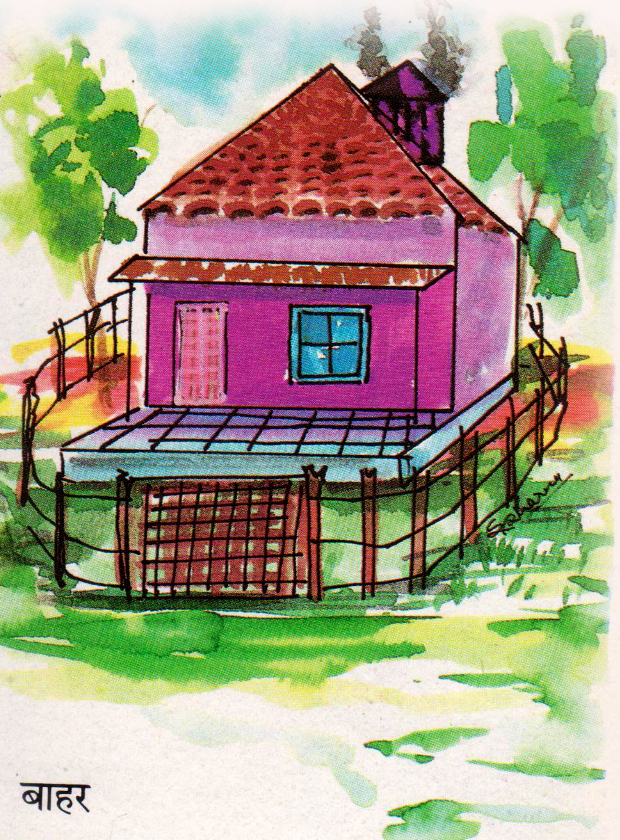
मैंने पाली एक गिलहरी
बाल रेशमी रंग सुनहरी,
कुतर-कुतर मीठे फल खाती
पेड़ों के ऊपर चढ़ जाती।

ऊपर जाती नीचे आती
दिन भर है यह दौड़ लगाती,
दो पैरों पर बैठे दिन भर
फल और मेवा खाती डट कर।

आहट पाती झट छुप जाती
नहीं पकड़ में है वह आती
यही गिलहरी मुझको प्यारी
सब पशुओं में है यह न्यारी।



मेरा घर

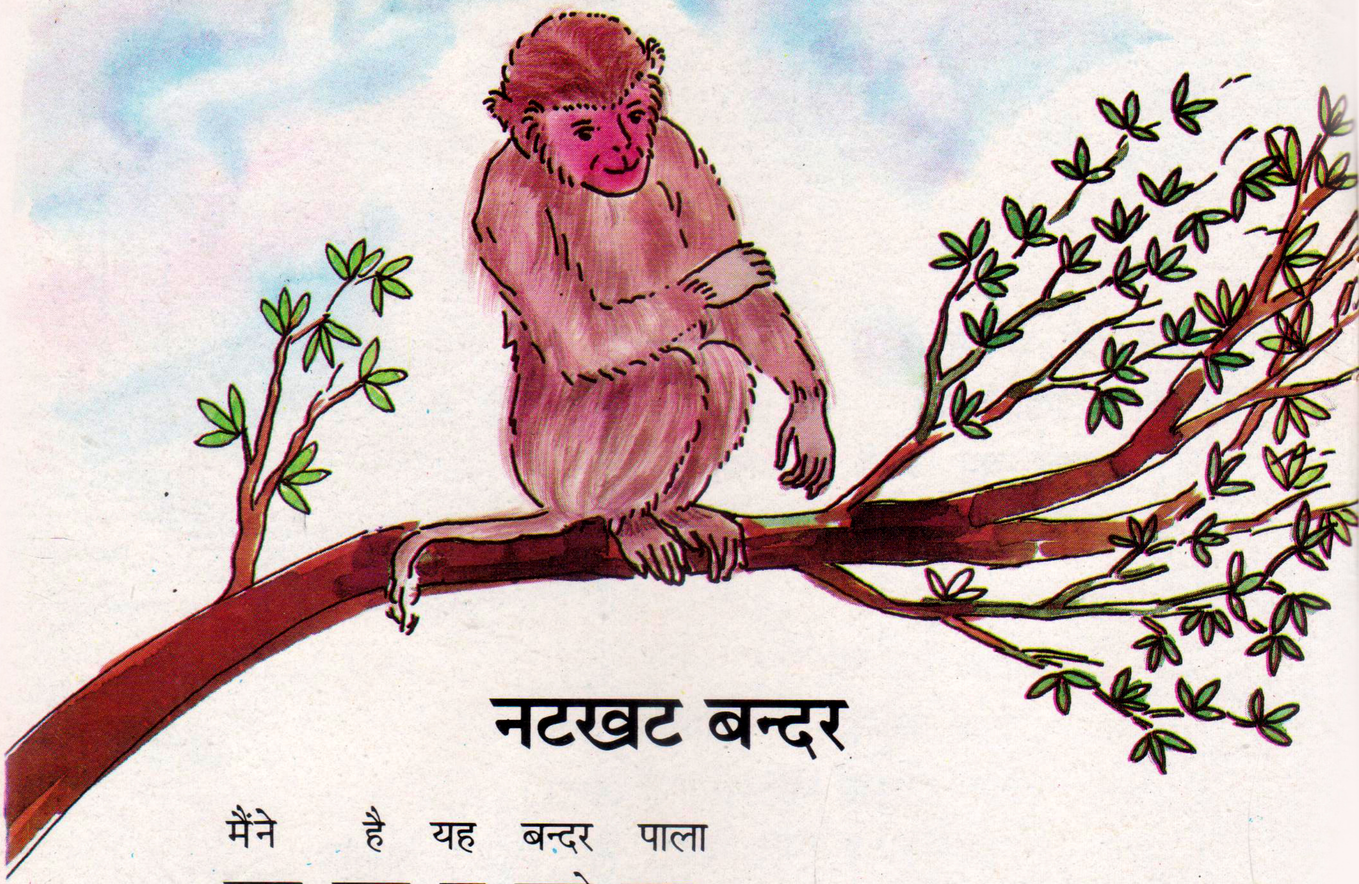


मेरा छोटा घर है सुन्दर
आओ, आकर देखो अन्दर।
खूब धूप आती है इसमें
और हवा फिर जाती इसमें।

चूल्हा है कमरे से बाहर
धुआँ नहीं भरता है अन्दर।
छोटा सा है द्वार बनाया
पर्दे से है इसे सजाया।



रोग न मेरे घर में आता
मुझे न आलस कभी सताता।
तुम भी सीखो अगर सफ़ाई
कभी न दुःख पाओगे, भाई॥



नटखट बन्दर

मैंने है यह बन्दर पाला
उचक उचक कर चलने वाला,
छोटा सा यह नटखट बन्दर
रहता इस बगिया के अन्दर।

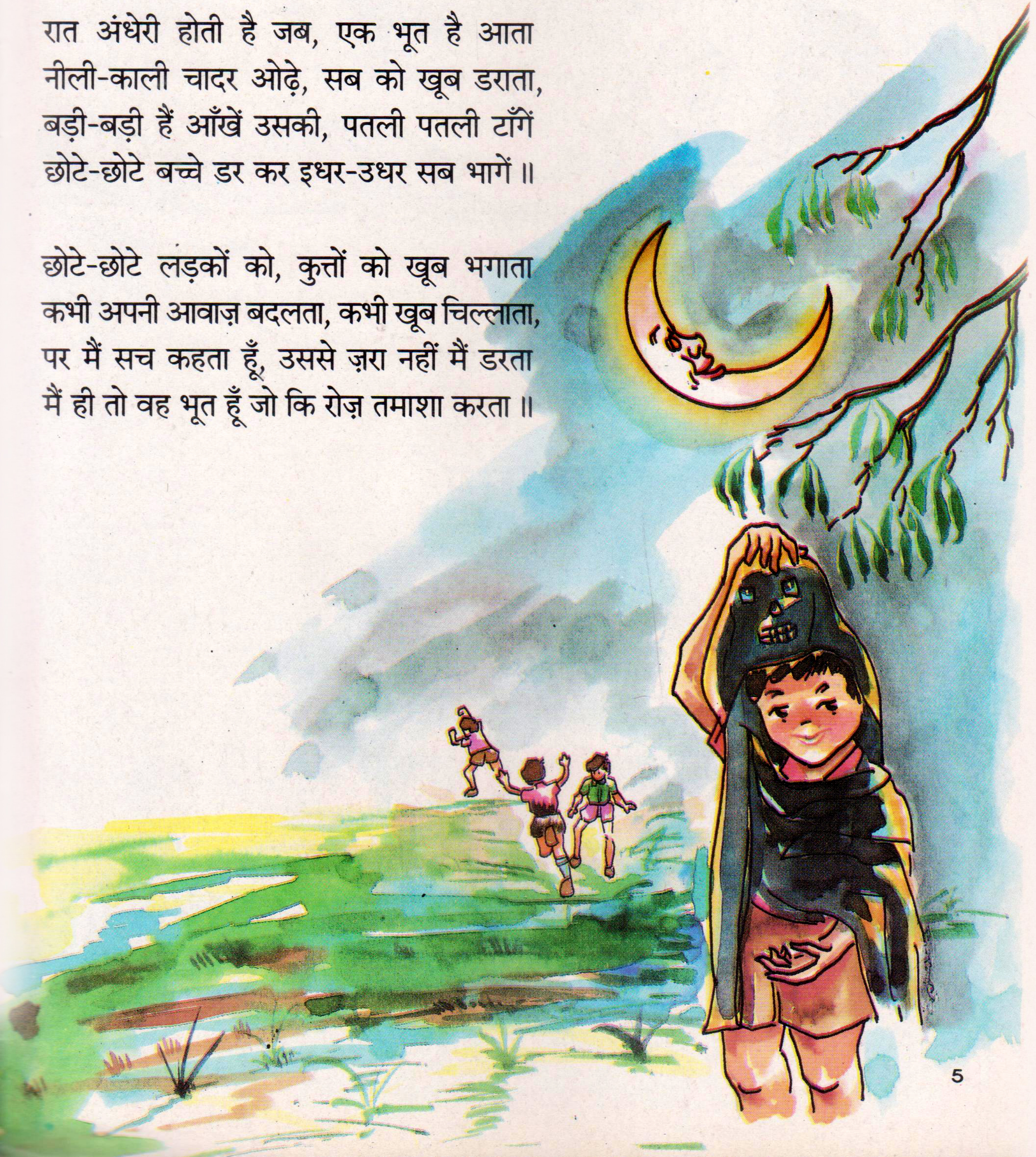
मीठे मीठे फल है खाता
केला, खीरा इसको भाता,
नकल सभी की खूब उड़ाता
बिन कंधी यह बाल बनाता।

दिन भर तो यह मुझ से खेले
दुम से लटके, झूला झूले,
मेरा बन्दर मुझको प्यारा
मेरा मनुआ सब से न्यारा॥

भूत का तमाशा

रात अंधेरी होती है जब, एक भूत है आता
नीली-काली चादर ओढ़े, सब को खूब डराता,
बड़ी-बड़ी हैं आँखें उसकी, पतली पतली टाँगें
छोटे-छोटे बच्चे डर कर इधर-उधर सब भागें ॥

छोटे-छोटे लड़कों को, कुत्तों को खूब भगाता
कभी अपनी आवाज़ बदलता, कभी खूब चिल्लाता,
पर मैं सच कहता हूँ, उससे ज़रा नहीं मैं डरता
मैं ही तो वह भूत हूँ जो कि रोज़ तमाशा करता ॥





सातूराम

सातू राम बड़े होशियार
जन्म लिया था सोमवार,
मंगलवार को नाम धराया
बुद्धवार को उठा, नहाया
वीरवार को ब्याह रचाया
शुक्रवार को बेटा पाया,
शनिवार को हुए बीमार
रविवार को मरा, जलाया
सात दिनों में सातूराम
कर गए दुनिया भर के काम ॥

With apologies to Solomon Grundy

होली-होली

सुबह डाल पर चिड़िया बोली
भाभी ने जो खिड़की खोली
आ पहुँची बच्चों की टोली
चिल्लाती थी होली, होली।

ले कर रंग भरी पिचकारी
मन्नू ने खिड़की से मारी
भीग गई भाभी की साड़ी,
भाभी कहती धत्त तुम्हारी।

बच्चे कहते, होली आई
हमें खिलाओ पान मिठाई
भाभी भर भर देती झोली
बच्चे गाते होली, होली॥





बेला के खिलौने



मैं ही वह गुड़िया हूँ जिसको बेला ने है तोड़ दिया
हाथ-पैर के टुकड़े करके सिर भी मेरा फोड़ दिया।
सुन्दर सा था मुखड़ा मेरा सुन्दर थे कपड़े मेरे
बेला की सब सखियाँ मुझको हरदम रहती थीं घेरे।

टूटी-फूटी मैली-गन्दी पड़ी हुई अब कोने में
अंग अंग टूटा है मेरा, क्या रक्खा अब रोने में।
ये बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से, चली चलूँ मैं दूर कहीं॥

2

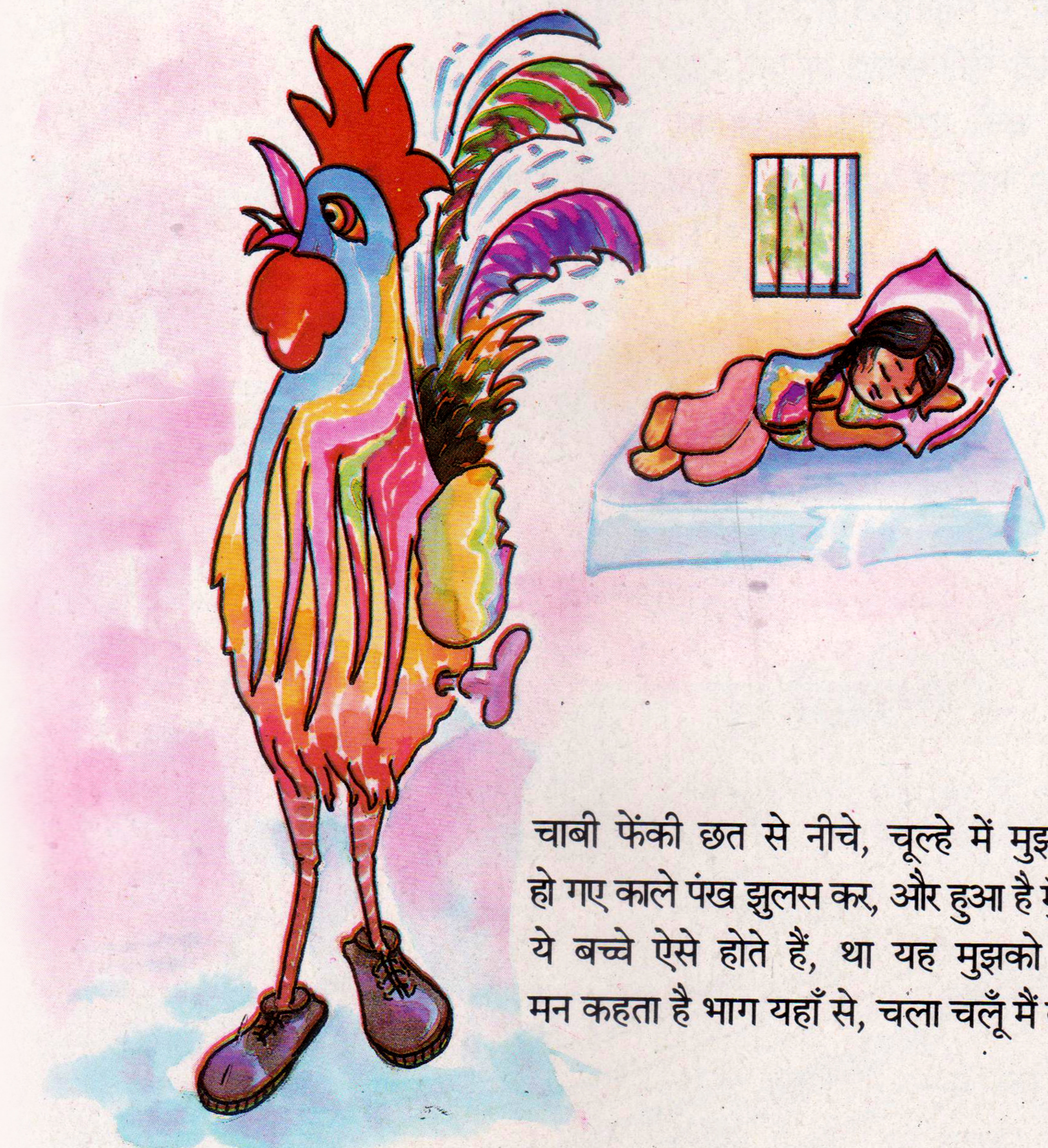
बेला को था सैर कराता, मैं हूँ छोटा सा घोड़ा
दीवारों से मारी टक्कर, मेरा माथा है फोड़ा।
एक टाँग से लंगड़ा करके कोने में फिर टेक दिया
कुछ दिन पीछे ले कर मुझको अलमारी पर फेंक दिया।

तब से पड़ा हुआ मैं ऊपर, मिट्टी मुझ पर जमती है
छोटी-मोटी मकड़ी आ कर, मुझ पर जाला बुनती है।
ये बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से, चला चलूँ मैं दूर कहीं॥

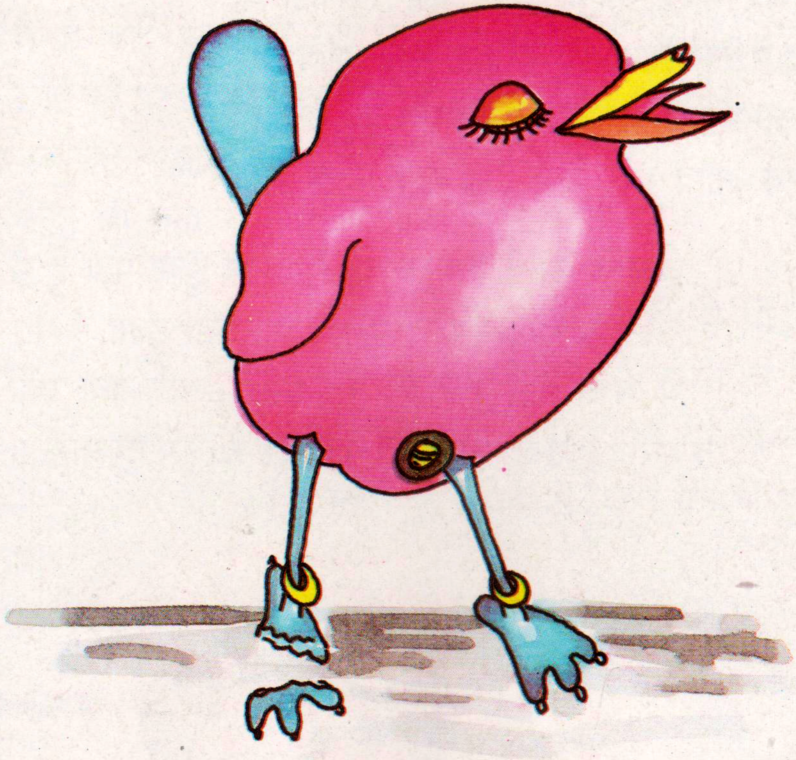


3

मैं ही वह मुर्गा हूँ जो नित थोड़ी चाबी भरने पर
कुकडू कूँ-कुकडू कूँ करता और घूमता इधर-उधर।
बेला मुझ में चाबी भर कर, झूठमूठ सो जाती थी
जब मैं कुकडू कूँ करता था, कैसी भागी आती थी।



चाबी फेंकी छत से नीचे, चूल्हे में मुझको डाला
हो गए काले पंख झुलस कर, और हुआ है मुँह काला।
ये बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से, चला चलूँ मैं दूर कहीं॥



4

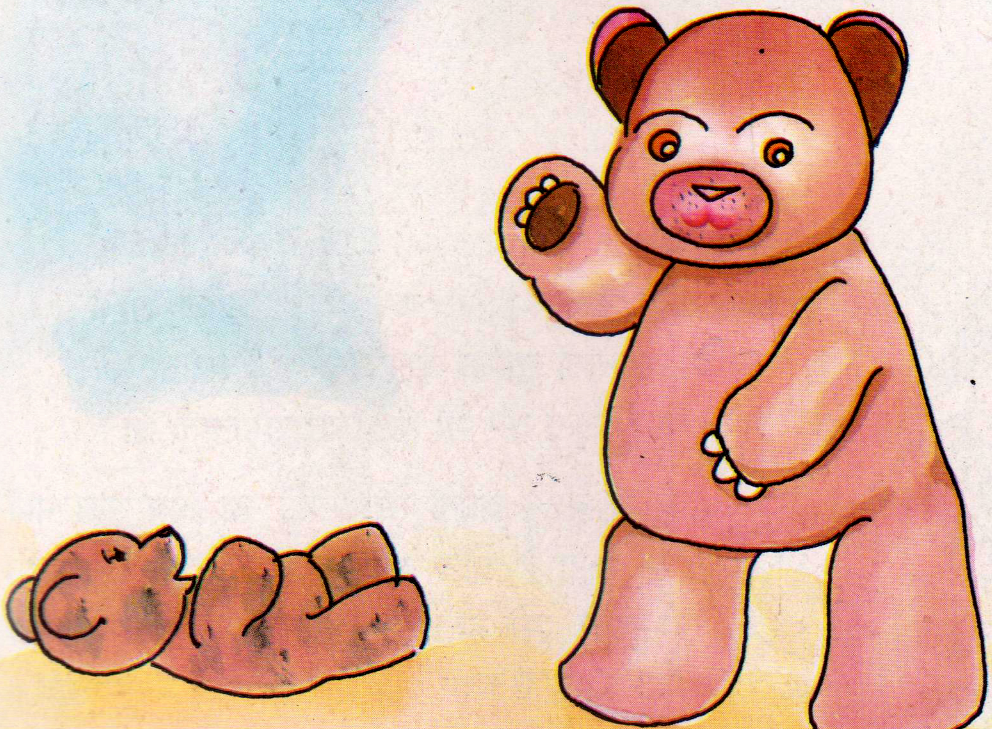


मैं हूँ चिड़िया नरम रबड़ की चूँ चूँ चूँ जो गाती थी
छोटे छोटे हाथों में ले, बेला जिसे दबाती थी।
पानी में नहलाती मुझको चावल कभी खिलाती थी
अपने पास लिटा कर मेरे पँखों को सहलाती थी।

चूँ चूँ करने वाली मेरी सीटी का अब पता नहीं
पेट फटा है चोंच कटी है जूतों में हूँ पड़ी हुई।
ये बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से चली चलूँ मैं दूर कहीं॥

मैं ही हूँ वह भोला भालू, बेला जिसे खिलाती थी
जिसे गोद में लिये बिना वह कभी न खाना खाती थी।
जब भी अम्माँ डाँट लगाती, मुझे चिपक कर रोती थी
मोती जैसी आँखें मेरी, देख देख खुश होती थी।

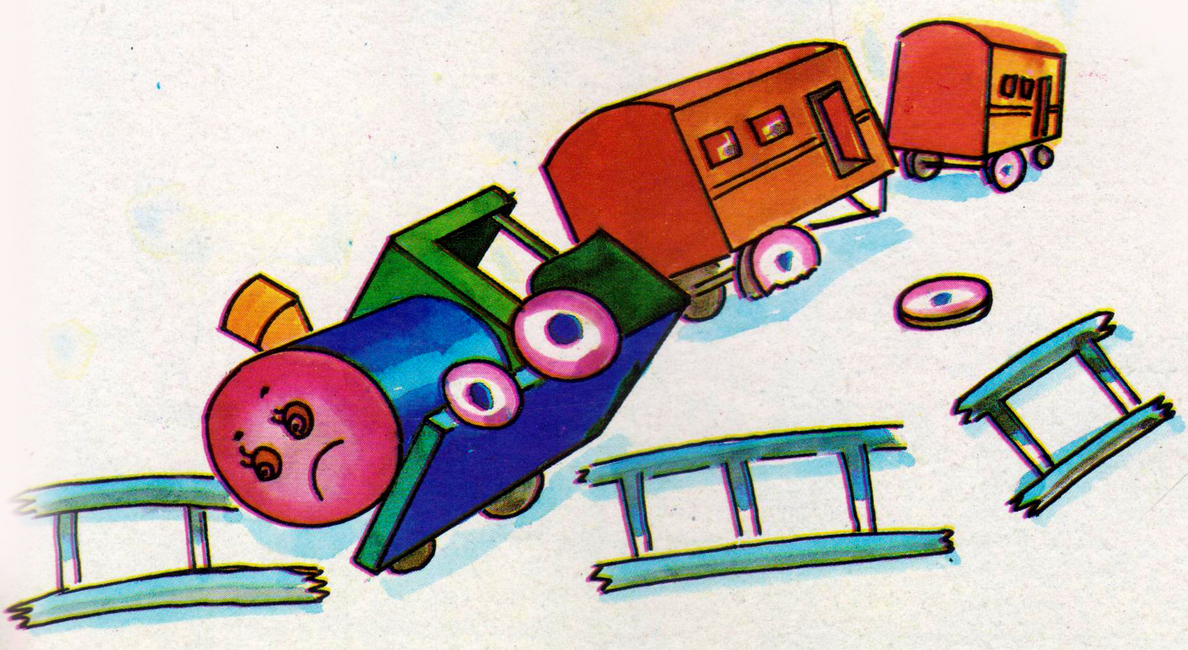
अब वे आँखें निकल गई हैं अन्धा हुआ पड़ा हूँ मैं
रंग-रूप कुछ रहा न मेरा, गन्दा पड़ा हुआ हूँ मैं।
ये बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से, चला चलूँ मैं दूर कहीं॥



6

मैं हूँ वही रेलगाड़ी जो दूर देश से आती थी
लोहे की पटड़ी पर चलती, बेला को तब भाती थी।
जब इंजन सीटी देता था, गाड़ी छुक छुक चलती थी
बेला भी मुख से सीटी दे पीछे भागी आती थी।

अब बेला ने इंजन तोड़ा, गाड़ी के पहिये खींचे
पटड़ी कर दी टेढ़ी-मेढ़ी, और फेंक दी है नीचे।
यह बच्चे ऐसे होते हैं, था यह मुझको पता नहीं
मन कहता है भाग यहाँ से, चली चलूँ मैं दूर कहीं॥



बेला की अब निद्रा टूटी, सपना भी तो टूट गया
सुनी खिलौनों की जो बातें, मन उसका अब दुखी हुआ।
सचमुच वह सब खेल-खिलौने, तोड़ तोड़ फेंका करती
नई नई चीज़ें ले आती बुरी तरह से थी रखती।

बेला भागी जा कर उसने, सभी खिलौने उठा लिये
कपड़े से फिर झाड़ पोंछ कर भली-भांति सब साफ़ किये।
माँ से कह कर गुड़िया की झट टाँगें बाहें सिलवाई
भैय्या से कह-सुन कर उसने, टूटी गाड़ी जुड़वाई॥



बटन काँच के ले दो सुन्दर आँख बनाईं भालू की
सीटी ला चिड़िया में डाली जोड़ी मुरगे की चाबी।
लगा गोंद भैय्या ने थोड़ी गुड़िया का सिर जोड़ दिया
माँ ने सुई-धागा ले कर, कपड़ा सी दिया नया-नया।

सभी खिलौने खुश हो हो कर चहक रहे थे मटक रहे
माँ भी खुश थी भैय्या खुश थे, बेला की तो कौन कहे।
सजा सजा कर सभी खिलौने, अलमारी में रखती थी
सभी खिलौनों में अब बेला, रानी जैसी जचती थी॥



काला भालू

एक मदारी लाया भालू
नाम था उसका मोटा कालू,
काले काले लम्बे बाल
धीमी-धीमी उसकी चाल।

है वह ऐसा हट्टा-कट्टा
लेकिन मुंह पर बाँधे पट्टा
नहीं सकेगा अब वह काट
जाता सीधी अपनी बाट।

पैसा जहाँ मदारी पाए
वहीं पे डमरू बजा नचाए
डमरू बाजे ढम ढम ढम
भालू नाचे छम छम छम॥

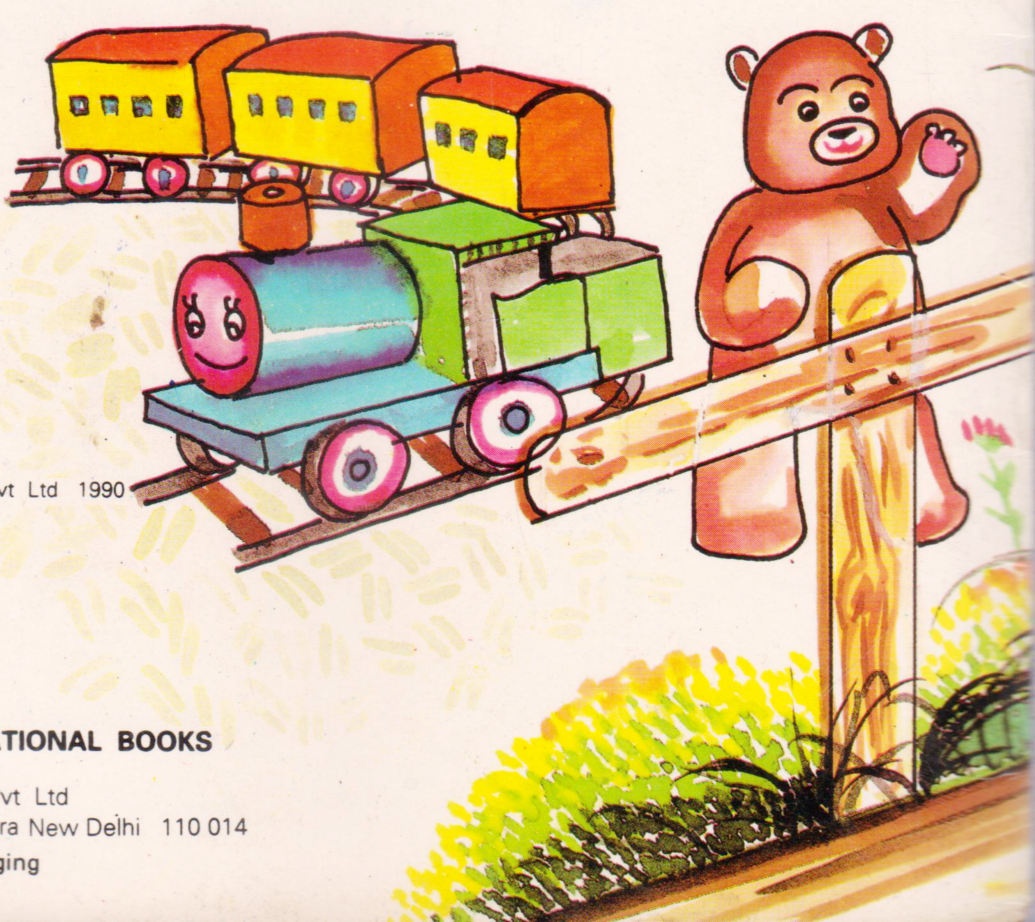


मेरे प्रिय गीत

भाग 1, 2 और 3

नन्हें-मुन्ने बच्चों के लिए लिखी गई यह छोटी बड़ी कविताएँ सभी के मन को मोह लेंगी। हँसना, खेलना, गाना, नकल करना, बच्चों के स्वाभाविक गुण हैं। बच्चों की प्यारी-प्यारी बातों को उन्हीं के शब्दों में कविताबद्ध करने का यह एक मौलिक और सरस प्रयास है।

अनुकरण करना बच्चों का विशेष गुण है; साथ ही उनकी स्मरण-शक्ति भी अत्यधिक तीव्र होती है। अध्यापकों से अनुरोध है कि वे इन कविताओं को गा कर, नाच कर, खेल-खेल में बच्चों को सिखायें।



Rs 10

ISBN 0-6069-5367-3

MADHUBAN EDUCATIONAL BOOKS
a division of
Vikas Publishing House Pvt Ltd
576 Masjid Road, Jangpura New Delhi 110 014
Printed by Ajanta Packaging